R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2012-14

मूल्य-4 रुपये, वर्ष-12, अङ्क-4, अप्रैल 2013

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ०प्र०) का मासिक मुख समाचार पत्र

शासन नायक भगवान श्री महावीरस्वामी की जयन्ती के पावन अवसर पर

तीर्थधाम मङ्गलायतन में स्थित भगवान श्री महावीरस्वामी जिनमन्दिर की वेदी

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व

विशेषाङ्क 19

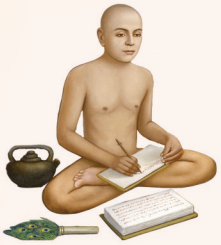

आगम महासागर में से संकलित

वैराग्य-वाणी

22. इस संसार में ये जो प्रख्यात पुण्यशाली चन्द्र, सूर्य, देवेन्द्र, नरेन्द्र, नारायण, बलभद्र आदि कीर्ति, कान्ति द्युति, बुद्धि, धन और बल के धारी हैं, वे भी यमराज की दाढ़ में जाकर, अपने-अपने समय पर मृत्यु को प्राप्त होते हैं, तब दूसरों की तो बात ही क्या है ? अत: बुद्धिमानों को धर्म में मन लगाना चाहिए।

(—श्री सुभाषितरत्न सन्दोह)

23. जिस संसार में पृथ्वी को उलटाने में, आकाशमार्ग से चन्द्र-सूर्य को उतार फैकने में, वायु को अचल करने में, समुद्र के जल को पी डालने में तथा पर्वत को चूर्ण करने में समर्थ पुरुष, मृत्यु के मुख में प्रवेश करते हों, वहाँ दूसरों की क्या स्थिति है ? ठीक ही है, जिस बिल में वनों के साथ पर्वत समा जाता है, उसमें परमाणु का समा जाना कौन बड़ी बात है ?

(—श्री सुभाषितरत्न सन्दोह)

24. जीव अकेला मरता है और स्वयं अकेला जन्मता है; अकेले का मरण होता है और अकेला रागरहित होता हुआ सिद्ध होता है।

(—श्री नियमसार)

25. यदि जीव ने मृत्यु नामक कल्पवृक्ष की प्राप्ति होते हुए भी, अपना कल्याण सिद्ध नहीं किया तो जीव, संसाररूपी कर्दम में डूबा हुआ फिर क्या करेगा ?

(—मृत्यु-महोत्सव)

26. ताड़ के वृक्ष से टूटा हुआ फल नीचे पृथ्वी पर गिरते हुए बीच में कब तक रहेगा ? वैसे ही जन्म होने के पश्चात् का जीवन, आयु-स्थिति में कब तक रहेगा ? अति अल्पकाल और वह भी अनियत। इसलिए हे भव्य! इन देहादि को क्षणभंगुर जानकर वास्तविक अविनाशी पद का साधन अन्य सर्व कार्यों को छोड़कर भी त्वरा से कर लेना, यही सुयोग्य है, क्योंकि जीवन-काल अत्यन्त संकीर्ण है।

(—आत्मानुशासन)

27. तीव्र रोग और कठोर दु:खरूपी वृक्षों से भरे संसाररूपी भयानक वन में वृद्धवस्थारूपी शिकारी से डरकर मृत्युरूपी व्याघ्र के भयानक मुख में चले गए प्राणी को तीनों लोक में कौन बचा सकता है ? उसे यदि बचा सकता है, तो जन्म-जरा-मरण का विनाश करनेवाला जिनभगवान द्वारा उपदिष्ट धर्मामृत ही बचा सकता है। उसे छोड़ अन्य कोई नहीं बचा सकता ?

(—श्री सुभाषितरत्न सन्दोह)

28. जिस प्रकार पक्षी रात्रि को किसी एक वृक्ष पर निवास करते हैं और फिर प्रभात होने पर वे सहसा सर्व दिशाओं में उड़ जाते हैं खेद है कि उसी प्रकार मनुष्य भी किसी एक कुल में स्थित रहकर फिर मृत्यु प्राप्त करके अन्य कुल का आश्रय करते हैं। इसलिए विद्वान् मनुष्य उसके लिए किञ्चित् भी शोक नहीं करते।

(—श्री पद्मनन्दि पंचविंशति)

अध्यात्म-अमृतसरिता

प्रशस्त या अप्रशस्त सर्व परिणति, उपाधिस्वरूप है। सर्व के साक्षीरूप वेदन परिणति, वह समाधिरूप है तथा स्वरूपस्थिरता, वह समाधिरूप है।

प्रतीतिरूप ऐसी ज्ञाता की ज्ञातारूप वेदन परिणति में स्थिरता को बढ़ाते-बढ़ाते साधक, साध्यरूप से पूर्ण होता है, पर्याय की पूर्ण निर्मलता होती है। द्रव्य तो अनादि-अनन्त परिपूर्ण शुद्धता से भरपूर है। शुद्धात्मा में स्वरूपरमणता बढ़ते-बढ़ते आत्म-उपयोग परलक्ष्य से सर्वथा छूटकर अपने कृतकृत्यस्वरूप को व्यक्त करता है, स्वरूप में आकर, उसके साथ एकमेक होकर सर्वांश जुड़ जाता है।

— ऐसे अद्‌भुत स्वरूप को प्राप्त, ऐसे श्री वीतरागदेव को और उस वीतरागस्वरूप को बारम्बार नमस्कार है। विक्रम संवत 1994

(बहिनश्री का ज्ञानवैभव से)

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2012-14

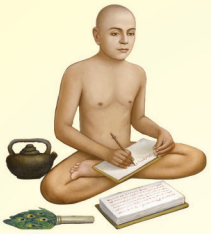

तीर्थधाम मङ्गलायतन

द्वारा सञ्चालित

भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन

में प्रवेश हेतु

प्रवेश पात्रता शिविर

दिनांक 01 अप्रैल से 05 अप्रैल 2013

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा संचालित भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के आगामी सत्र में, हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से कक्षा सात उत्तीर्ण कर चुके छात्रों को इस वर्ष मात्र कक्षा आठ में प्रवेश दिया जाएगा। जिन छात्रों ने यहाँ के सुमधुर वातावरण में रहकर उच्चस्तरीय लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के अध्ययन हेतु अपना प्रवेश-पत्र हमें प्रेषित किया है, उनमें से प्रवेश योग्य छात्रों को प्रवेश पात्रता शिविर में सम्मिलित होने हेतु पत्र प्रेषित किया जा चुका है। कृपया वे सभी छात्र, पत्र में दर्शाये गये बिन्दुओं का परिपालन करते हुए, दिनांक 31 मार्च 2013 सायं काल तक **तीर्थधाम मङ्गलायतन** में अवश्य पहुँचें।

निदेशक, तीर्थधाम मङ्गलायतन
भगवानश्री आदिनाथ विद्यानिकेतन
अलीगढ़-आगरामार्ग, सासनी-204216(उत्तर प्रदेश)
फोन : 09897069969, 09897890893

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़ - 202 001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan
Digamber Jain Trust
Harinagar, Agra Road, Aligarh-202 001

Ph. : 9997996346, 2410010/11; Fax : 2410019/22
info@mangalayatan.com; www.mangalayatan.com